सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
मूल्य ₹ 3/-
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS @4pm NEWS NETWORK
● वर्षः 12 ● अंकः 61 पृष्ठः 8 ● लखनऊ, सोमवार 6 अप्रैल, 2026

भीगी शाम, भीड़ का तूफान

4PM कन्सर्ट में स्वानंद की आवाज पर झूमा लखनऊ

» 4PM के संपादक संजय शर्मा का इनिशिएटिव

» संगीत प्रेमियों ने बोला थैंक्यू...

अंसल स्थित दयाल बाग लॉन में स्वानंद किरकिरे को सुनने के लिए सैकड़ों लोगों का जुटना और खराब मौसम के बावजूद अंत तक जमे रहना यह इस बात का सबूत है कि कला अगर सच्ची हो तो हालात मायने नहीं रखते।

4पीएम न्यूज नेटवर्क

लखनऊ। लखनऊ जहां हर शाम में अदब घुला होता है और हर महफिल में दिल धड़कता है। लेकिन शनिवार की गुजरी वह शाम कुछ अलग थी। आसमान में कड़कती बिजली, हवा में नमी और जमीन पर बैठी सैकड़ों आंखों में एक ही इंतजार, एक आवाज जो शब्दों को सिर्फ गाती नहीं जीती है।

अंसल गोल्फ सिटी स्थिति दयाल बाग लॉन की हरियाली किसी फिल्मी सेट से कम नहीं लग रही थी। बूंदाबांदी की महीन परत हर चेहरे को छू रही थी और उसी के बीच मंच पर उतरे स्वानंद किरकिरे। कोई शोर नहीं कोई बनावट नहीं बस एक सादा मुस्कान और फिर आवाज। ओ री चिरैया.. जैसे ही हवा में घुला भीड़ खामोश हो गई। ऐसा सन्नाटा, जिसमें हर इंसान अपने भीतर उतर रहा था। फिर पियू बोले.. आया और महफिल में बैठे लोग मुस्कुराने लगे। गिव मी सम सनशाइन.. ने जैसे हर दिल की अनकही बात कह दी। बारिश रुक-रुक कर गिर रही थी बिजली आसमान में चमक रही थी और ऐसा लग रहा था जैसे नेचर खुद इस कन्सर्ट की बैकग्राउंड बन गयी हो। यह सिर्फ एक म्यूजिकल इवेंट नहीं था यह लखनऊ की रूह का जश्न था।

"बूंदाबांदी की महीन परत हर चेहरे को छू रही थी और उसी के बीच मंच पर उतरे स्वानंद किरकिरे।"

म्यूजिक लवर्स की जुनून ने दी मौसम को मात

4PM का आयोजन शब्दों से जादू और जादू से इतिहास

4पीएम के संपादक संजय शर्मा और उनकी टीम ने सिर्फ एक इवेंट आर्गनाइज्ड नहीं किया बल्कि उन्होंने यादों का कभी न भूलने वाला वह तोहफा लखनऊ को मयस्सर कराया जो दिल के एक कोने में जुगनूओं की मानिंद हमेशा चमकेगा। उन्होंने ऐसी रूमानी शाम के दीदार कराने का रास्ता फरहम कराया जिसे सिर्फ एहसासात के जरिये ही महसूस किया जा सकता था। उनके और उनकी टीम के जुनून ने रूमानियत के एहसासों के

लाइव नजारों से दो-चार करा दिया। बुक माय शो से टिकट लेकर आए लोग जब लौटे तो उनके पास सिर्फ एक शाम की याद नहीं थी उनके पास एक एहसास था। इतने विपरीत मौसम में भी सैकड़ों लोगों का जुटना और अंत तक जमे रहना यह इस बात का सबूत है कि कला अगर सच्ची हो तो हालात मायने नहीं रखते।

लखनऊ ने साबित किया वह सिर्फ देखता नहीं महसूस करता है

लखनऊ ने एक बार फिर दिखा दिया कि यह शहर सिर्फ तहजीब का नहीं बल्कि एहसास का शहर है। जब मौसम ने करवट ली बूंदें गिरने लगीं और बिजली कड़कने लगी तो उम्मीद थी कि भीड़ छंट जाएगी। लेकिन हुआ ठीक उल्टा। लोग छाते लेकर आए कुछ भीगते रहे कुछ कुर्सियों पर जमे रहे लेकिन कोई गया नहीं। हर कोई उस आवाज को पकड़ लेना चाहता था जो दिल के सबसे नर्म हिस्से को छूती है। दयाल लॉन में बैठे बुजुर्ग हों या युवा हर चेहरे पर एक ही भाव था आज कुछ खास हो रहा है। यह वही लखनऊ है जो मुशायरों में रातें जागता है जो गजलों में खुद को ढूंढता है और जब स्वानंद किरकिरे जैसे फनकार आते हैं तो उन्हें सिर आंखों पर बिठाता है।

तालियों में भी सुनाई दे रहा था संगीत

तालियां भी यहां अलग थीं जो सिर्फ स्वानंद किरकिरे की परफारमेंस के लिए नहीं बल्कि उन अनकहे जज्बातों के लिए थीं जो सालों से दिल के किसी कोने में दबे थे और आज बाहर आने का रास्ता पा गए थे। हर ताल हर सुर हर शब्द भीड़ के भीतर गहराई तक जाकर गूंज रहा था और बारिश भी इस क्रेज को कम नहीं कर सकीं बल्कि बारिश ने इस जुनून को और गहरा कर दिया। भीगते हुए लोग अपनी जगह से नहीं हिले क्योंकि उस पल को छोड़ना जैसे खुद से दूर हो जाना था। यह वही लखनऊ था जो अदब के साथ-साथ एहसासों को भी जीना जानता है। आखिर में यह साफ हो गया कि यह भीड़ सिर्फ म्यूजिक लवर्स की नहीं थी। यह भीड़ उन लोगों की भीड़ थी जो अपनी यादों अपने अधूरे ख्वाबों और अपने जज्बातों को फिर से जीने आए थे। और स्वानंद किरकिरे की आवाज ने उन्हें वह मौका दे दिया जिसका इंतजार शायद वे बरसों से कर रहे थे।

बीजेपी सरकार के कहर से उप्र में एक और पीड़ित श्रेणी बनी : अखिलेश यादव

» सपा प्रमुख ने प्रीपेड मीटर को लेकर प्रदेश सरकार को घेरा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में 27 के विस चुनाव से पहले ही सियासत गरमाने लगी है, पूर्व मुख्यमंत्री व समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने एकबार फिर भाजपा सरकार पर करारा हमला बोला है। सपा प्रमुख ने बिजली के प्रीपेड मीटर को लेकर प्रदेश सरकार को घेरा है।

अखिलेश यादव ने कहा कि बीजेपी सरकार के कहर की वजह से उप्र में पीड़ित लोगों की एक नई श्रेणी बन गई है, जिसका नाम 'प्रीपेड पीड़ित' है। सपा चीफ अखिलेश यादव ने एक्स पर पोस्ट कर लिखा-बीजेपी सरकार के कहर की वजह से उप्र में पीड़ित लोगों की एक नई श्रेणी बन गई है, जिसका नाम है 'प्रीपेड पीड़ित'. 'प्रीपेड पीड़ित' का मतलब ये है कि जो लोग बिजली के प्रीपेड मीटर लगाकर बैठे हैं वो स्मार्ट मीटर की खामियों की वजह से बिजली कट जाने पर अंधेरे और गर्मी का संकट झेलने को मजबूर हैं।

दर-दर भटकने को मजबूर है जनता

सपा चीफ ने आगे लिखा-जब बिजली खाते में बिजली के इस्तेमाल करने से पहले ही पैसा जमा हो जाता है तो फिर सरकार और कंपनी जनता को क्यों परेशान कर रही है। बिजली कंपनियों को तो पैसा पहले ही मिल जाता है, फिर उन्हें आम जनता की चिंता करने की क्या पड़ी है। बेचारी जनता दर-दर भटकने पर मजबूर है लेकिन सरकार और कंपनियाँ के सामने कोई सुनवाई नहीं है क्योंकि वो पहले से ही मिलीभगत करके पैसे कमा के बैठी हैं।

भाजपा सरकार महिलाओं की गणना नहीं करना चाहती, आरक्षण क्या देगी

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि महिला आरक्षण बिल का आधार ही निराधार है। पहले जनगणना कराई जाए, फिर महिला आरक्षण की बात उठाई जाए। उन्होंने भाजपा सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि जो सरकार महिलाओं को गिनना नहीं चाहती है, वो भला उन्हें आरक्षण क्या देगी। सपा अध्यक्ष ने जारी बयान में कहा कि गिनती ही गलत होगी तो आरक्षण कैसे सही होगा। अगर किसी काम को करने की सही मंशा होती है, तो शंका नहीं होती है। आरक्षण का आधार अगर कुल सीटों का एक तिहाई है तो इसका मतलब हुआ कि ये गणित का विषय है और गणित का आधार अंक होते हैं। इस मामले में संख्या का आधार जनसंख्या होती है, जिसका आधार जनगणना होती है। जब महिलाओं की जनसंख्या के लिए 2011 के पुराने आंकड़ों को आधार बनाएंगे तो महिला आरक्षण का आधार ही गलत होगा। महिलाओं के साथ भाजपा और उनके संगी-साथी जो धोखा करना चाहते हैं, महिलाओं के साथ वो छलावा हम नहीं होने देंगे। कुल मिलाकर सरकार से हमारा ये कहना है कि जब तक जनगणना नहीं, तब तक महिला आरक्षण पर बहस नहीं होनी चाहिए।

उपभोक्ता नहीं, उपभुगता रह गई जनता

उन्होंने कहा सच तो ये है कि बीजेपी राज में अब जनता 'उपभोक्ता' नहीं रह गई है, 'उपभुगता' हो गई है क्योंकि वो हेराफेरी से बनी बीजेपी सरकार के दुष्परिणामों को 'भुगतने' पर मजबूर है. इसी कारण पीडीए की संख्या भी लगातार बढ़ रही है क्योंकि हम हमेशा कहते हैं और आज भी कह रहे हैं- जो पीड़ित, वो पीडीए! अब पीडीए में जुड़े ये नये 'प्रीपेड पीड़ित' कह रहे हैं कि चिंता न करें बुरे दिन जानेवाले हैं. पीड़ित सरकार आएगी, सबको बिजली दिलवाएगी!

राजद को बूथ स्तर तक मजबूत करना होगा : तेजस्वी यादव

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

रांची। झारखंड की राजधानी रांची के कार्निवल हॉल में राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के कार्यकारी अध्यक्ष तेजस्वी यादव के अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया। वहीं राजद विधायक ने सीएम पर तंज कसा और कहा नीतीश कुमार का राजनीतिक अंत निकट आ गया है।

कार्यक्र म में राज्यभर से बड़ी संख्या में पार्टी कार्यकर्ता और पदाधिकारी शामिल हुए। कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए तेजस्वी यादव ने संगठन को जमीनी स्तर पर मजबूत करने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि पार्टी को बूथ स्तर तक सशक्त बनाना बेहद जरूरी है। इसके लिए हर कार्यकर्ता को रोज कम से कम एक घंटा संगठन के लिए देना होगा और जनता की समस्याओं को उठाना होगा। उन्होंने आगामी परिसीमन का जिक्र करते हुए कहा कि झारखंड में सीटों की संख्या बढ़ने की संभावना है। ऐसे में राजद को अभी से सभी सीटों पर चुनाव लड़ने की तैयारी शुरू कर देनी चाहिए। उन्होंने दावा किया कि आने वाले समय में पार्टी पूरे राज्य में मजबूती के साथ चुनाव लड़ेगी।

यूजीसी कानून न लागू होने के लिए केंद्र सरकार जिम्मेदार : पल्लवी पटेल

» अपना दल कमेरावादी बोली-27 का चुनाव प्रदेश की सत्ता को बदलने वाला है

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

अंबेडकरनगर। अपना दल कमेरावादी की ओर से अकबरपुर के एक गेस्ट हाउस में मंडलीय समता सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें सिराथू विधायक डॉ. पल्लवी पटेल, राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. कृष्णा पटेल समेत अन्य लोग शामिल हुए।

कार्यक्रम के बाद डॉ. पल्लवी पटेल ने मीडिया से मुखातिब होते हुए केंद्र सरकार पर यूजीसी, जातिगत जनगणना समेत अन्य मुद्दों पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि यूजीसी 2026 पर रोक लगने के लिए केंद्र सरकार जिम्मेदार है। जिम्मेदारी केंद्र की सरकार की थी कि यूजीसी को इतना लचर नहीं बनाना था। सुप्रीम कोर्ट में सरकारी वकील ही इस विनियम को डिफेंस नहीं

कर पाता है। केंद्र सरकार ने देश को एलपीजी और डीजल-पेट्रोल की लाइन में खड़ा कर दिया है। खराब विदेश नीतियों के कारण देश की जनता लाइन में खड़ी है। भाजपा ने सत्ता में आने के बाद लोगों को राशन से लेकर खाता खुलवाने, नोटबंदी की लाइनों में खड़ा करवाने का काम किया है। भाजपा को जब लगता है किसी एक मुद्दे पर घिर रहे हैं तो देश की जनता व राजनीतिक दलों को दूसरे मुद्दों में उलझाने का काम कर रहे हैं। विपक्ष की जिम्मेदारी है कि भाजपा की सोच और नियत की जानकारी जनता के बीच में जाकर दें। वर्ष 27 का चुनाव प्रदेश की सत्ता को बदलने वाला है। उत्तर प्रदेश देश की राजनीति को प्रभावित करने वाला है। जनता के हित के मुद्दों को सरकार के सामने उठाने का काम हमेशा करते रहेंगे। एसआईआर पर कहा कि यह केंद्र सरकार का षड्यंत्र रहा है। चुनाव आयोग सिर्फ मोहरा मात्र है। भाजपा 400 सीटों का आंकड़ा लेकर मैदान पर उतरी थी लेकिन देश की सजग जनता ने उन्हें 293 सीट पर रोकने का काम किया था। कहा कि लोगों का वोट का अधिकार छीनने के लिए एसआईआर का जुमला छोड़ा गया है। जब सरकार खिसक रही है तो मतदाता पात्र-अपात्र के रूप में घुसपैठिए दिखाई देने लगे हैं। जातिगत जनगणना कब तक होगी और इसके आंकड़ों को सामाजिक न्याय के लिए कैसे प्रयोग में लाया जाएगा यह आज तक स्पष्ट नहीं कर पाई है। अपना दल सड़क से लेकर सदन तक जातिगत जनगणना की लड़ाई लड़ेगा।

पूरे देश में बीजेपी का शासन फेल : डोटासरा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जयपुर। राजस्थान कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने एक बार फिर केंद्र की भाजपा सरकार पर जुबानी हमला किया। उन्होंने बिना लाग-लपेट के कहा कि देशभर में भाजपा का शासन पूरी तरह नाकाम साबित हुआ है और तथाकथित डबल इंजन सरकार का नारा महज एक जुमला बनकर रह गया है।

जनता को न राहत मिली, न विकास दिखा। उनके इस आक्रामक रुख ने राजनीतिक हलकों में हलचल मचा दी है। पश्चिम बंगाल के आगामी विधानसभा चुनावों पर सीधा बयान देते हुए डोटासरा ने कहा कि लोकतंत्र में चुनाव हर हाल में होंगे और कोई भी ताकत उन्हें रोकने में सक्षम नहीं है। उन्होंने चुनौती देते हुए कहा कि अगर किसी में दम है तो चुनाव प्रक्रिया को बाधित करके दिखाए। टीएमसी के जीत के दावों पर उन्होंने कहा कि चुनाव में अंतिम फैसला हमेशा जनता का होता है और जिसे ज्यादा वोट मिलेंगे, जीत उसी की होगी। महंगाई और बेरोजगारी के मुद्दे पर डोटासरा ने सरकार को जमकर घेरा। उन्होंने कहा कि आम आदमी महंगाई की दोहरी मार से कराह रहा है। रसोई गैस जैसी बुनियादी ज़रूरत तक आसानी से नहीं मिल पा रही और रोज़गार के दरवाज़े लगातार बंद होते जा रहे हैं। इससे युवाओं में घोर निराशा पैदा हो रही है। सड़कों की बदहाली का ज़िक्र करते हुए उन्होंने कहा कि जगह-जगह सड़कें उधड़ी पड़ी हैं और अधूरे निर्माण कार्यों की वजह से आमजन को रोजाना भारी कठिनाई झेल रहा हैं।

बामुलाहिज़ा
कार्टून: हसन जैदी

भाजपा की राजनीति केवल लालू यादव और उनके परिवार तक ही सीमित : भाई वीरेंद्र

राष्ट्रीय जनता दल के विधायक ने खगड़िया में भाजपा पर किया तीखा हमला

» कहा कि भाजपा अंग्रेजों की एजेंट रही है और उसे देश से कोई प्रेम नहीं

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। राष्ट्रीय जनता दल के विधायक भाई वीरेंद्र ने खगड़िया में भाजपा पर तीखा हमला किया है। उन्होंने कहा कि भाजपा की राजनीति केवल लालू यादव और उनके परिवार तक ही सीमित रह गई है। भाई वीरेन्द्र ने कहा कि भाजपा अपने सहयोगियों को निगल जाती है।

उन्होंने कहा कि इसका प्रत्यक्ष उदाहरण महाराष्ट्र और ओडिशा हैं, और अब बिहार भी इसी क्रम में शामिल होने वाला है। भाई वीरेंद्र ने दावा करते हुए कहा कि बिहार में एक साल के भीतर जदयू का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। उन्होंने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर निशाना साधते हुए कहा कि राजनीति केवल सांसदों और विधायकों के होने से नहीं चलती, इसलिए अब नीतीश जी की राजनीति का अंत भी निकट है। भाई वीरेंद्र ने आरोप लगाते हुए कहा कि भाजपा अंग्रेजों की एजेंट रही है और उसे देश से कोई प्रेम नहीं है।

सरकार का विशेष सत्र बुलाने पर विपक्ष का प्रहार

संसद का बजट सत्र 16 अप्रैल तक के लिए स्थगित

सत्र से पहले सियासी घमासान के आसार

- महिला आरक्षण विधेयक पर सरकार की बड़ी तैयारी
- 16 से 18 अप्रैल तक विशेष सत्र
- लोकसभा सीट परिसीमन पर भी चर्चा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। सरकार का बजट सत्र फिलहाल खत्म हो गया है। पर विशेष सत्र बुला रही है। ये सत्र 16 अप्रैल को प्रारंभ होगी। इस सत्र से पहले सियासी घमासान मचा हुआ है। दरअसल महिला आरक्षण को लेकर सरकार और विपक्ष आमने-सामने आ गए हैं। इन सब बातों से ऐस लगता है कि आने वाला सत्र हंगामेदार होगा। बता दें संसद का विशेष सत्र 16 अप्रैल से महिला आरक्षण विधेयक पर केंद्रित होगा, जिसके लिए सरकार लोकसभा सीटें बढ़ाने की योजना बना रही है।

कांग्रेस समेत विपक्षी दलों ने इस प्रक्रिया पर सवाल उठाते हुए संविधान संशोधन से पहले सर्वदलीय बैठक बुलाने की मांग की है, जिससे राजनीतिक टकराव बढ़ गया है। संसद का बजट सत्र 16 अप्रैल को थोड़े समय के विराम के बाद पुन: शुरू होगा और सभी की निगाहें महिला आरक्षण से जुड़े महत्वपूर्ण विधेयकों पर टिकी हैं। सरकार लोकसभा की सीटों की संख्या 543 से बढ़ाकर 816 करने की योजना बना रही है ताकि महिलाओं के लिए आरक्षण को जल्द से जल्द लागू किया जा सके। सूत्रों के अनुसार, सत्र लगभग तीन दिनों तक चल सकता है और प्रस्तावित विधेयकों को सबसे पहले लोकसभा में पेश किए जाने की संभावना है। यह योजना नारी शक्ति वंदन अधिनियम से जुड़ी है, जिसका उद्देश्य संसद में महिलाओं के लिए सीटें आरक्षित करना है। सरकार का मानना है कि कानून को लागू करने का समय आ गया है और प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए वह विपक्षी दलों के संपर्क में है।

लोकसभा की सीटें बढ़ाने पर भी होगी चर्चा

जहाँ सरकार महिला आरक्षण कानून को तेजी से लागू करने के लिए एक महत्वपूर्ण संविधान संशोधन विधेयक पेश कर सकती है। इस प्रस्ताव के तहत लोकसभा की सीटें 543 से बढ़ाकर 816 की जा सकती हैं, जिसमें 273 सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित होंगी और परिसीमन 2011 की जनगणना पर आधारित होगा। भारत सरकार 16 से 18 अप्रैल, 2026 तक संसद का तीन दिवसीय विशेष सत्र बुलाने जा रही है, जिसका मुख्य उद्देश्य महिला आरक्षण अधिनियम, जिसे आधिकारिक तौर पर नारी शक्ति वंदन अधिनियम, 2023 के नाम से जाना जाता है, के कार्यान्वयन

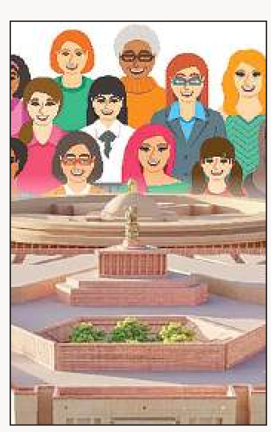

में तेजी लाने के उद्देश्य से संशोधनों पर चर्चा करना और उन्हें पारित करना है। लोकसभा और राज्यसभा दोनों की कार्यवाही आज, 2 अप्रैल को स्थगित कर दी गई। इससे पहले, संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने राज्यसभा में बोलते हुए कहा कि सदन जल्द ही एक महत्वपूर्ण विधेयक पर विचार करने के लिए फिर से बैठेगा। रिजिजू ने कहा कि हमारे पास कुछ विधेयक और महत्वपूर्ण मुद्दे हैं, और हमने इनकी जानकारी विपक्ष को भी दे दी है। अगले दो-तीन हफ्तों में हम एक बहुत महत्वपूर्ण विधेयक पेश करने जा रहे हैं। सरकारी कैलेंडर के अनुसार, 28 जनवरी को शुरू हुआ बजट सत्र 2 अप्रैल को समाप्त होना था। शुक्रवार को संसद की कोई बैठक नहीं होगी। दोनों सदन अब 16 अप्रैल को मिलेंगे। राज्यसभा की बैठक बृहस्पतिवार को 16 अप्रैल पूर्वाह्न 11 बजे के लिए स्थगित की गयी तथा उच्च सदन में सरकार की ओर से संकेत दिया गया कि वह कोई 'महत्वपूर्ण विधेयक' लाने वाली है। संसद के बजट सत्र के पूर्व-घोषित कार्यक्रम के अनुसार बैठक को आज अनिश्चित काल के लिए स्थगित किया जाना था किंतु उपसभापति हरिवंश ने आज बैठक को 16 अप्रैल पूर्वाह्न 11 बजे तक के लिए स्थगित किया। संसद के बचे हुए कुछ दिनों में सरकार द्वारा नारी शक्ति वंदन अधिनियम (महिला आरक्षण कानून) में संशोधन हेतु संविधान संशोधन विधेयक पेश किए जाने की संभावना है।

इस मुद्दे ने राज्यसभा में तीखी बहस

इस मुद्दे ने राज्यसभा में तीखी बहस छेड़ दी है। सदन के नेता जेपी नड्डा ने सरकार का बचाव करते हुए कहा कि कानून कब लाया जाए, यह तय करने का अधिकार सरकार के पास है। वहीं, कई विपक्षी सदस्यों ने चुनाव के बाद सर्वदलीय बैठक की मांग की। संजय सिंह जैसे नेताओं ने भी सरकार पर इस मुद्दे का राजनीतिकरण करने का आरोप लगाया। कुछ सांसदों ने व्यापक चिंताएं जताईं। फौजिया खान ने सवाल उठाया कि क्या राज्यसभा और राज्य विधान परिषदों में भी इसी तरह का आरक्षण लागू होगा। मनोज झा ने पूछा कि क्या आरक्षित सीटों में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग की महिलाओं के लिए उप-कोटा होगा।

होर्मुज जलडमरूमध्य मामले पर सरकार की चुप्पी पर उठे सवाल

कांग्रेस सांसद मनीष तिवारी ने केंद्र सरकार से होर्मुज जलडमरूमध्य को फिर से खोलने के प्रयासों में पारदर्शिता बरतने का आह्वान किया। उन्होंने इस मार्ग से होने वाले कच्चे तेल के परिवहन में आई भारी कमी को उजागर किया, जो पश्चिम एशिया संघर्ष से पहले प्रतिदिन 22 मिलियन बैरल था,

लेकिन अब घटकर मात्र 0.5 मिलियन बैरल रह गया है। तिवारी ने कहा कि मूल बात यह है कि तुर्की, मिस्र और चीन इस दिशा में पहल कर रहे हैं, इसके अलावा, पिछले कुछ महीनों में ऐसी खबरें आई हैं कि पाकिस्तान में कुछ बैठकें हुई हैं। लेकिन होर्मुज जलडमरूमध्य तक पहुंच के संभावित नुकसान के संबंध में सरकार कूटनीतिक दृष्टिकोण से क्या पहल कर रही है 28 फरवरी से पहले इस मार्ग से प्रतिदिन 22 मिलियन बैरल कच्चे तेल का परिवहन होता था, जो अब घटकर 0.5 मिलियन बैरल रह गया है। उन्होंने भारतीय सरकार से जलडमरूमध्य से तेल प्रवाह बहाल करने के लिए उठाए जा रहे कदमों को स्पष्ट करने का आग्रह किया और कहा कि इस तेल का एक बड़ा हिस्सा अभी भी चीन को भेजा जा रहा है, जबकि पाकिस्तान ने कुछ रियायतें हासिल कर ली हैं। वहीं, भारत को केवल दो या तीन टैंकर ही मिले हैं।

कांग्रेस सांसद जयराम रमेश ने कहा- संसदीय कार्य मंत्री का पत्र मिला

कांग्रेस सांसद जयराम रमेश ने कहा कि लोकसभा और राज्यसभा का तीन दिवसीय विशेष सत्र 16, 17 और 18 अप्रैल को निर्धारित है। 16 मार्च को संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने राज्यसभा में विपक्ष के नेता और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे को पत्र लिखकर कांग्रेस पार्टी के साथ चर्चा करने की इच्छा व्यक्त की। वे महिला आरक्षण विधेयक, 23 में कुछ संशोधन करना चाहते थे। किरेन रिजिजू का यह पत्र 16 मार्च को प्राप्त हुआ। कांग्रेस नेता ने दावा किया कि रिजिजू जी ने उसी दिन किरेन रिजिजू को जवाब देते हुए कहा, मुझे आपका पत्र

प्राप्त हुआ है, लेकिन कृपया सर्वदलीय बैठक बुलाएं। सभी विपक्षी दलों को एक साथ बुलाएं, और हम इस पर चर्चा करेंगे। कृपया अपना प्रस्ताव लिखित में प्रस्तुत करें। 24 मार्च को तृणमूल कांग्रेस को छोड़कर सभी विपक्षी दलों ने इस पत्र से सहमति जताई। राहुल गांधी, मल्लिकार्जुन खर्गे और सभी नेताओं ने किरेन रिजिजू को जवाब में लिखा, आप संविधान में संशोधन करना चाहते हैं... कृपया सर्वदलीय बैठक बुलाएं। 24 मार्च को सभी विपक्षी दलों ने सर्वसम्मति से कहा कि 29 अप्रैल के बाद सर्वदलीय बैठक बुलाई जानी चाहिए।

नेचर ने की मेहमानों की मेजबानी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

भीगी कुर्सियां हल्की ठंडी हवा और उन सबके बीच बैठे लोग कोई छाता थामे कोई बूंदों को अपने चेहरे पर गिरने देता हुआ हर कोई इस मौसम को अपने तरीके से जी रहा था। कोई भी उठकर जाने को तैयार नहीं था क्योंकि उस रात का हर पल जैसे एक नई याद लिख रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे नेचर खुद इस महफिल की मेजबान बन गई हो। वह कह रही हो कि जब हम जवां होंगे जाने कहां होंगे। मगर यह पल यह एहसास यहीं कहीं हमेशा जिंदा रहेगा। बारिश ने सिर्फ जमीन को नहीं भिगोया उसने दिलों को भी छू लिया। उसने यह साबित कर दिया कि जब संगीत सच्चा हो तो मौसम रुकावट नहीं बनता बल्कि वह खुद उस कहानी का सबसे खूबसूरत हिस्सा बन जाता है। और आखिर में यह कहना गलत नहीं होगा कि अगर स्वानंद किरकिरे की आवाज ने महफिल को रूह दी तो मौसम ने उसे जादू बना दिया। एक ऐसा जादू जिसे लखनऊ लंबे समय तक भूल नहीं पाएगा।

जिद... सच की

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

प्रशासनिक लापरवाही के कब तक होते रहेंगे शिकार

> राजनीतिक दलों ने व्यवस्था पर सवाल उठाए कि आखिर कब तक लोग ऐसे मरते रहेंगे। जब दुनियादारी से परेशान व्यक्ति ईश्वरीय आस्था की शरण में जाता है तो उसके बेचैन मन को असीम शांति मिलती है। फलस्वरूप वह नाना प्रकार के रोगों से प्रभावित होते रहने से बच जाता है।

अभी हाल ही में बिहार के कुछ धार्मिक स्थलों पर हादसें की खबरें आई हैं। इनमें कई लोगों के मरने की बात सामने आई। जो प्रथमा दृष्टया कारण पता चला वह प्रशासनिक लापरवाही है। राजनीतिक दलों ने व्यवस्था पर सवाल उठाए कि आखिर कब तक लोग ऐसे मरते रहेंगे। जब दुनियादारी से परेशान व्यक्ति ईश्वरीय आस्था की शरण में जाता है तो उसके बेचैन मन को असीम शांति मिलती है। फलस्वरूप वह नाना प्रकार के रोगों से प्रभावित होते रहने से बच जाता है। वहीं उसकी मनोकामनाएं रूपीं मन्नतें भाव मार्ग द्वारा सम्बन्धित हृदय को प्रभावित करते हुए द्रवित करती हैं, जिससे श्रद्धालु के मनोरथ पूरे हो जाते हैं। यही वजह है कि ईश्वरीय आस्था व विश्वास हर धर्म में किसी न किसी रूप में व्याप्त और सर्वव्यापी है। यद्यपि, मौजूदा दौर में धर्म-कर्म को भी मुनाफे का धंधा बना दिया गया है। जहां अमीर मंदिरों पर सरकारी नियंत्रण कसा हुआ है, वहीं गरीब मंदिरों की व्यवस्था भगवान भरोसे या मंदिर स्वयंसेवक के जरिए संचालित होते हैं। इनमें से कुछ मंदिरों में भारी भीड़ होती है, लेकिन स्थानीय सिविल प्रशासन की अदूरदर्शिता और पुलिस प्रशासन की लापरवाही से जब तब हादसे होते रहते हैं।

लिहाजा सुव्यवस्था व सुशासन अक्सर सवालों के घेरे में रहते आये हैं। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के अस्ताचलगामी राजनीतिक साम्राज्य के लिए शीतला माता मंदिर भगदड़ से उपजी टीस सालों तक लोगों को सालती रहेगी। उनके पास से गृह मंत्रालय क्या गया, उनका गृह जिला भी मानवीय आपदा का शिकार हो गया। उनका मन जरूर अफसोस करता होगा, यदि अपनी मिट्टी से थोड़ा सा भी प्यार बचा रह गया होगा तो !गौरतलब है कि बिहार के नालंदा जिले के बिहारशरीफ स्थित शीतला माता मंदिर में 31 मार्च 26 को चैत्र मास के अंतिम मंगलवार को भगदड़ मच गई, जिसमें 8-9 श्रद्धालुओं (ज्यादातर महिलाओं) की मौत हो गई और कई घायल हुए। बताया गया कि यह हादसा भारी भीड़, अपर्याप्त सुरक्षा और प्रबंधन की कमी के कारण हुआ। नीतिगत दृष्टि से यह घटना राज्य की भीड़ प्रबंधन व्यवस्था पर सवाल उठाती है। लिहाजा, स्थानीय पुलिस अधीक्षक ने लोकल थाना प्रभारी को कर्तव्य हीनता के आरोप में निलंबित कर दिया है। इस गम्भीर हादसे के कारण के तौर पर मंदिर का छोटा होना, बैरिकेडिंग न होना और पुलिस की अनुपस्थिति से हुई धक्कामुक्की आदि बताया गया। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि महावीर जयंती के संयोग से भीड़ बढ़ गई, लेकिन कोई पूर्व तैयारी नहीं की गई। राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण की गाइडलाइन का पालन न होने से हादसा हुआ।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

नई सोच रोकेगी मनुष्यता के खिलाफ अपराध

विश्वनाथ सचदेव

स्वतंत्रता सेनानी और अस्पृश्य समझे जाने वाले वर्ग के नेता बाबू जगजीवन राम को बचपन में स्कूल में इसलिए सज़ा मिली थी कि उन्होंने उस मटके से पानी पी लिया था जो स्कूल के सवर्ण अध्यापकों के लिए रखा गया था। यह बात तब की है जब हम गुलाम थे। पर ऐसे ही 'अपराध' के लिए स्वतंत्र भारत में भी नौ साल के एक दलित बच्चे को भी सजा मिली थी- राजस्थान के एक स्कूल में उन बच्चों से भी अनजाने में ही अध्यापकों के मटके से पानी पीने का 'अपराध' हो गया था। यह घटना हमारी आज़ादी की 75वीं सालगिरह के दिन घटी थी। दोनों ही घटनाओं में लगभग एक सदी की दूरी है। सदियों से दलितों के साथ इस तरह के अत्याचार होते आ रहे हैं। उम्मीद थी कि स्वतंत्र भारत में हमारी समाज व्यवस्था के माथे से यह कलंक मिट जायेगा।

पर आज भी, यानी इक्कीसवीं सदी के तीसरे दशक में इस आशय के समाचार मिल जाते हैं कि फलां गांव में या फलां कस्बे में दलित समाज के किसी व्यक्ति को इसलिए सजा भुगतान पड़ी कि उसने घोड़े पर बैठकर दूल्हा बनने का दुस्साहस किया था! आजादी प्राप्त करने के बाद जब हमने अपना संविधान बनाया तो उसमें यह स्पष्ट व्यवस्था की थी कि स्वतंत्र भारत में किसी भी नागरिक को अस्पृश्यता जैसे अभिशाप को झेलना न पड़े। एक लंबे संघर्ष के बाद यह स्थिति आयी थी, पर अभी भी अस्पृश्यता के अभिशाप से हम मुक्त नहीं हो पाये। सौ साल पहले बाबासाहेब अम्बेडकर ने महाराष्ट्र के महाड में अगड़ों के लिए आरक्षित समझे जाने वाले एक तालाब से पानी पीने के अधिकार का संघर्ष शुरू किया था। उस तालाब में जानवर तो पानी पी सकते थे, पर अस्पृश्य समझे जाने वाले दलित को यह अधिकार नहीं था। ऊंची समझी जाने वाली जातियों के लोग यह मानते थे कि दलितों के छूने से वह भी अपवित्र हो जायेंगे। पता नहीं यह धारणा कब से चली आ रही है, पर यह एक शर्मनाक सच्चाई है कि हमारे देश में आज भी छुआछूत से हमारा पीछा नहीं छूट पाया।

शहरी भारत में भले ही माथे पर यह कलंक न दिखता हो, पर ग्रामीण भारत आज भी जैसे इस त्रास को भोगने के लिए शापित है। यहां यह याद रखना जरूरी है कि लगभग अस्सी प्रतिशत भारत गांवों में बसता है! सन 1950 में हमने अपने संविधान में अस्पृश्यता पर प्रतिबंध लगाने की व्यवस्था की थी। हमारा संविधान कहता है, 'सरकार धर्म, जाति, जन्म आदि के आधार पर किसी नागरिक से भेदभाव नहीं करेगी'। लगता है, भेदभाव करने वालों ने मान लिया है कि यह व्यवस्था सरकार के लिए है, समाज के लिए नहीं! सौ साल पहले डाक्टर भीमराव अम्बेडकर ने समाज को यह अहसास कराने की कोशिश की थी। सौ साल पहले 20 मार्च, 1927 को महाराष्ट्र के एक तालाब के पानी को न केवल दलितों ने छुआ, बल्कि उस तालाब का पानी पिया भी। वस्तुत: यह मनुष्यता की रक्षा के लिए किये जाने वाले एक संघर्ष की शुरुआत थी। यह सौवां वर्ष है इस संघर्ष का और संघर्ष आज भी जारी है। हम इस बात पर तो गर्व कर सकते हैं कि सौ साल पहले ऐसा कोई संघर्ष प्रारंभ हुआ था, पर देखा जाये तो यह शर्म की ही बात है कि अब तक इस संघर्ष में पूरी विजय नहीं मिल पायी। पर इस असफलता से संघर्ष की महत्ता कम नहीं हो जाती। जरूरी है कि महाड में शुरू किये गये इस जल-सत्याग्रह की महत्ता को समझा जाये, इस संघर्ष को तार्किक परिणति तक पहुंचाया जाये। उस दिन अम्बेडकर के नेतृत्व में लगभग ढाई हजार दलितों ने महाड के चौदार तालाब के पवित्र समझे जाने वाले जल को अंजलि में भरकर एक नई आजादी के संघर्ष की शुरुआत की थी। यह संघर्ष इस सिद्धांत को स्वीकारने के लिए भी था कि जल, जंगल और हवा प्रकृति ने हर प्राणी के लिए दिये हैं, किसी जन्म या किसी धर्म के नाम पर इनका बंटवारा नहीं हो सकता। प्रकृति के इन अवदानों पर कोई अपना अधिकार नहीं जता सकता। पर इस बात को सवर्ण समझे जाने वाले समाज ने आसानी से स्वीकार नहीं किया। महाड सत्याग्रह से नाराज सवर्णों ने न केवल तालाब का 'शुद्धीकरण' किया, बल्कि सत्याग्रहियों को मारा-पीटा भी गया था। वे मामले को अदालत में भी लेकर पहुंचे। दस साल लगे कोर्ट को पानी पर सबके अधिकार का फैसला सुनाने में।

और यह भी हकीकत है कि आज भी देश का एक बहुत बड़ा तबका मन से यह मानने को तैयार नहीं है कि दलितों को अस्पृश्य मानना मनुष्यता के खिलाफ एक अपराध है। सदियों से चले आ रहे इस अपराध का प्रायश्चित होना ही चाहिए। यह अपराध-बोध ही समता के इस संघर्ष को किसी तार्किक परिणति तक पहुंचा सकता है। महाड के जल-सत्याग्रह का शताब्दी वर्ष है यह। वह सत्याग्रह वस्तुत: मानव-समाज की समानता के लिए एक नए संघर्ष की शुरुआत थी। यह संघर्ष तब तक पूरा नहीं होगा, जब तक कानून या संविधान में दिये गये अधिकारों को सामाजिक स्तर पर पूरी मान्यता नहीं मिल जाती।

संवेदनशीलता और सुलभ स्वास्थ्य सेवाओं की जरूरत

दीपिका अरोड़ा

ऑटिज्म' नामक डिसऑर्डर दुनियाभर में तेजी से फैल रहा है। 'द लैंसेट' पत्रिका में प्रकाशित 'ग्लोबल बर्डन ऑफ डिजीज 2021' पर आधारित अध्ययन के अनुमानों के अनुसार, 61.8 मिलियन यानी 6 करोड़ 18 लाख लोग इस समस्या से पीड़ित पाए गए। इसमें महिलाएं, पुरुष तथा बच्चे सभी शामिल हैं। आंकड़ों के मुताबिक, विश्व का हर 127वां व्यक्ति ऑटिस्टिक है। खासकर वर्ष 2000 के बाद से ऑटिज्म के मामलों में 178 प्रतिशत वृद्धि देखी गई। यह संख्या लगातार बढ़ रही है। महिलाओं के मुकाबले पुरुषों में इसका प्रसार अधिक है। प्रति एक लाख पुरुषों पर ऑटिज्म के 1,065 केस सामने आए, जबकि महिलाओं में यह संख्या 508 है। 'ऑटिज्म' यानी ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (एएसडी) से अभिप्राय एक आजीवन न्यूरो-डेवलपमेंटल स्थिति है, जो सामाजिक व्यवहार तथा संचार के तरीकों को काफी हद तक प्रभावित करती है।

इससे पीड़ित लोग न तो दूसरों की बात ठीक से समझ पाते हैं, न ही खुद को अभिव्यक्त कर पाते हैं। अध्ययन के दौरान ऑटिज्म के बारे में कई तथ्य उजागर हुए, जिसके नतीजे अंतर्राष्ट्रीय जर्नल लैंसेट साइकियाट्री में प्रकाशित किए गए। शोधकर्ताओं के मुताबिक, ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर 20 वर्ष से कम आयु के बच्चों और किशोरों के स्वास्थ्य से जुड़ी 10 सबसे गैर-घातक में चुनौतियों में से एक है। इसके बावजूद यह समस्या जीवन के हर पहलू पर असर डालती है। ऑटिज्म से प्रभावित होने में कोई अकेला कारक उत्तरदायी नहीं माना जा सकता। यद्यपि मुख्य रूप से यह आनुवंशिक कारणों तथा मस्तिष्क के विकास में अंतर से संबद्ध है फिर भी आहार, व्यायाम, निद्रा, तनाव, अवसाद, प्राकृतिक वातावरण एवं जीवनशैली जैसे अनेक कारक इसमें प्रभावी भूमिका निभाते हैं। गर्भावस्था के दौरान संक्रमण या तनाव होना, माता द्वारा कुछ दवाओं का सेवन, समय-पूर्व अथवा सामान्य आकार से छोटे बच्चे का जन्म होना, पर्यावरणीय विषाक्त पदार्थों के संपर्क में आना आदि ऑटिज्म के जोखिम कारक हो सकते हैं।

कुछ विशेषज्ञों के अनुसार, अधिक आयु में गर्भाधारण करना भी बच्चे के ऑटिस्टिक होने का कारण बन सकता है। एएसडी ग्रस्त बच्चे के छोटे जैविक भाई-बहन में ऑटिज्म का खतरा 3-10 प्रतिशत अधिक पाया गया। विशेषकर जुड़वां बच्चों में यह दर ज्यादा रही। चिकित्सकों के अनुसार, गर्भस्थ शिशु के ऑटिज्मग्रस्त होने का पता लगाना संभव नहीं, चूंकि इसके लक्षण जन्म उपरांत ही प्रकट होते हैं। आमतौर पर 12-18 माह की आयु में या इससे पूर्व ही इन्हें देखा जा सकता है। ये सामान्य से लेकर गंभीर हो सकते हैं। अधिकतर मामलों में यह स्थिति जीवनपर्यन्त बनी रहती है। नवजात शिशु की दैनिक क्रियाएं स्वयं ही इस संदर्भ में विभिन्न तरह के संकेत देती नजर आती हैं, जैसे- दूसरों की भावनाएं समझने में कठिनाई, अकेले रहना, देरी से बोलना-बिल्कुल न बोलना अथवा एक ही शब्द बारंबार दोहराना, परिवर्तन के प्रति असामान्य प्रतिक्रिया, हाथ फड़फड़ाना, तेज आवाज, लाइट या विशिष्ट बनावट, गंध के प्रति बेहद संवेदनशील होना, वस्तु विशेष की ओर बार-बार इशारा करना, मां की आवाज अनसुनी करना, अधिकतर हाथों के बल चलकर दूसरों के पास जाना, आई कॉन्टैक्ट न बनाना आदि।

एक स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर होने के चलते ऑटिज्म के लक्षण भिन्न-भिन्न होते हैं, जिसके तहत प्रभावित लोगों को न्यूनतम से लेकर आंशिक या 24 घंटे तक की देखभाल की जरूरत हो सकती है। ऑटिज्म का निदान अमूमन 18-24 माह के व्यावहारिक अवलोकनों के जरिये ही किया जाता है। हालांकि, इसका समुचित इलाज उपलब्ध नहीं किंतु प्रारंभिक काल में ही स्पीच थेरैपी, व्यवहार थेरैपी (जैसे एबीए), ऑक्यूपेशनल थेरैपी आदि देने से जीवन में काफी हद तक सुधार आ सकता है। हर ऑटिस्टिक व्यक्ति अपने आप में अलग होता है, अत: उनके सीखने, ध्यान केंद्रित करने की क्षमता, संवेदनशीलता तथा दोहरावदार व्यवहार जैसे लक्षणों में विरोधाभास होना भी स्वाभाविक है। कुछेक ऑटिस्टिक व्यक्तियों में विलक्षण प्रतिभाएं भी देखने को मिलेंगी, ऐसे लोग अपनी रचनात्मकता के बल पर समूचे जगत को अचंभित करने का सामर्थ्य रखते हैं। शोधकर्ताओं की मानें तो इतिहास की अनेक नामचीन हस्तियों (अनुमानित, विस्तारित स्पेक्ट्रम) में ऑटिज्म के लक्षण पाए गए। इन प्रतिभाओं में भौतिक विज्ञानी अल्बर्ट आइंस्टीन, गणितज्ञ तथा भौतिक विज्ञानी आइजैक न्यूटन, प्रसिद्ध आविष्कारक निकोला टेस्ला, संगीतकार वोल्फगैंग एमाडेउस मोजार्ट आदि का नाम प्रमुख तौर पर लिया जा सकता है।

भारत के पहले विख्यात ऑटिस्टिक फ़ैशन मॉडल, जिन्होंने स्टीरियोटाइप को तोड़कर मॉडलिंग के क्षेत्र में अपनी उल्लेखनीय पहचान बनाई, का नाम भी इसी सूची में शामिल है। इनकी सफलता दर्शाती है कि ऑटिज्मग्रस्त लोग किसी से कम नहीं, अपनी विशिष्ट रुचियों व क्षमताओं का सही उपयोग करके वे समाज में अहम योगदान दे सकते हैं। ऑटिज्म पीड़ितों के लिए शीघ्र निदान तथा विकासात्मक सहयोग बेहद महत्वपूर्ण है। वहीं स्वास्थ्य प्रणालियों को ऑटिज्म के प्रति प्रतिक्रियात्मक बनाने के लिए समावेशी-सुलभ स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं की जरूरत है। ऑटिज्म वास्तव में, कोई बीमारी न होकर मस्तिष्क के अलग तरह से कार्य करने की स्थिति है। तो क्यों न समाज के प्रत्येक व्यक्ति को समभाव से ससम्मान अपनाया जाए?

हिमंता की पत्नी के पास तीन देशों का पासपोर्ट, मचा सियासी संग्राम

» कांग्रेस ने भाजपा को घेरा, सीएम ने पाकिस्तानी साजिश का लगाया आरोप

» पत्नी रिंकी भुइयां सरमा ने पवन खेड़ा के खिलाफ दर्ज कराई एफआईआर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। हिमंता की पत्नी के पास तीन देशों का पासपोर्ट की बात कांग्रेस ने उठाकर असम में सियासी संग्राम मचा दिया है। उधर भाजपा व सीएम हिमंता ने कांग्रेस पर करारा पलटवार किया है। असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने सोमवार को कांग्रेस नेताओं पवन खेड़ा और गौरव गोगोई द्वारा आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस को पाकिस्तानी सोशल मीडिया ग्रुप द्वारा सप्लाई किए गए फर्जी सामग्री पर आधारित बताते हुए तीखा हमला बोला। उन्होंने अपनी पत्नी रिंकी भुइयां सरमा के नाम पर लगाए गए मल्टीपल पासपोर्ट और विदेशी संपत्ति के आरोपों को पूरी तरह फर्जी और एआई फोटोशॉप बताया।

विवाद की शुरुआत कांग्रेस नेता पवन खेड़ा द्वारा रविवार को दिल्ली में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस से हुई। खेड़ा ने दावा किया कि मुख्यमंत्री की पत्नी रिंकी भुइयां सरमा के पास तीन देशों संयुक्त अरब अमीरात (यूएई), एंटीगुआ और बारबुडा तथा मिस्र के पासपोर्ट हैं। उन्होंने यह आरोप लगाया कि रिंकी भुइयां सरमा की दुबई में संपत्ति और अमेरिका (वायोमिंग) में कंपनी है, जिसका जिक्र चुनावी हलफनामे में नहीं किया गया। खेड़ा ने सवाल उठाया कि हिमंत सरमा की राजनीति मुस्लिम विरोध पर टिकी है, फिर उनकी पत्नी दो मुस्लिम देशों के पासपोर्ट कैसे रख सकती हैं? उन्होंने भारतीय कानून के तहत ड्यूल सिटीजनशिप पर भी सवाल किया। सरमा ने आगे कहा कि पिछले 10 दिनों में एक पाकिस्तानी चैनल ने असम चुनाव को लेकर कम से कम 11 टॉक शो किए, जिसमें हर बार निष्कर्ष यही निकाला कि कांग्रेस को जीतना चाहिए। उन्होंने कहा कि यह असम चुनाव में पाकिस्तान का हस्तक्षेप दर्शाता है और कानून प्रवर्तन एजेंसियां इसे गंभीरता से लेंगी।

भारत सरकार ने भी पासपोर्ट को फर्जी बताया: सरमा

मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने सोमवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस कर इन आरोपों का जवाब दिया। उन्होंने कहा कि यूएई पासपोर्ट मूल रूप से एक पाकिस्तानी व्यक्ति द्वारा सोशल मीडिया पर अपलोड किया गया था। कांग्रेस ने उसमें एआई फोटोशॉप कर रिंकी सरमा का नाम डाला। मिस्र का पासपोर्ट भी फर्जी है, जिसकी पुष्टि गूगल रिवर्स इमेज सर्च से हो सकती है। दुबई सरकार की वेबसाइट से पुष्टि हो चुकी है कि उल्लिखित दुबई पासपोर्ट फर्जी है। भारतीय सरकार ने भी इसे फर्जी बताया है। अन्य दो पासपोर्टों की रिपोर्ट सोमवार या मंगलवार तक आने की उम्मीद है। पासपोर्ट में इस्तेमाल फोटो रिंकी भुइयां सरमा की नहीं है। सरमा ने दावा किया कि पवन खेड़ा और गौरव गोगोई की दिल्ली और गुवाहाटी में हुई दोनों प्रेस कॉन्फ्रेंस का पूरा सामग्री एक पाकिस्तानी सोशल मीडिया ग्रूप द्वारा प्रदान किया गया था। चुनाव के नतीजे प्रभावित करने के लिए ऐसा करने पर सजा आजीवन कारावास तक हो सकती है। उन्होंने पवन खेड़ा के खिलाफ मानहानि का दीवानी और फौजदारी मुकदमा भी दायर करने की बात कही।

गौरव गोगोई ने एक्स पर पोस्ट कर तंज कसा

असम प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष गौरव गोगोई ने एक्स पर पोस्ट कर तंज कसा। उन्होंने दुबई के गोल्डन वीजा के बारे में लिखा कि दुबई में गोल्डन वीजा पढ़ रहा हूं। यह लंबी अवधि का निवास वीजा है जो निवेशकों को संयुक्त अरब अमीरात में रहने की अनुमति देता है। कांग्रेस आरोपों पर अड़ी हुई है और चुनाव आयोग से जांच की मांग कर सकती है।

भारत को अंधेरे में रखा जा रहा : राहुल

» डेटा संप्रभुता को लेकर सरकार की चुप्पी पर नेता प्रतिपक्ष का वार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने सोमवार को भारत की डेटा संप्रभुता को लेकर चिंता जताई है। उन्होंने कहा कि देश को वैश्विक तकनीकी दौड़ में अग्रणी होना चाहिए, लेकिन इसके बजाय उसे यह अंधेरे में रखा जा रहा है कि उसके डेटा की सुरक्षा कैसे की जाएगी। विपक्ष के नेता ने कहा कि भारत का डेटा उसके लोगों का है और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) अर्थव्यवस्था में यह सबसे बड़ी ताकतों में से एक हो सकता है - आई बनाने, कंपनियों को बढ़ाने और रोजगार पैदा करने के लिए।

राहुल गांधी ने अपने व्हाट्सएप चैनल पर एक पोस्ट में कहा, इसलिए मैंने सरकार से अमेरिका के साथ हालिया व्यापार सौदे के बारे में कुछ महत्वपूर्ण सवाल पूछे हैं- अमेरिका के साथ बाधाओं को कम करने का हमारे डेटा के लिए क्या मतलब है? क्या हमारा स्वास्थ्य डेटा, वित्तीय डेटा और सरकारी डेटाबेस भारत में ही रहेंगे? क्या भारत अभी भी विदेशी कंपनियों को डेटा यहां संग्रहीत करने और इसका इस्तेमाल अपना खुद का एआई बनाने के लिए कर सकता है? पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा, हमारी डेटा संप्रभुता, स्वास्थ्य डेटा, एआई और स्थानीय डेटा भंडारण के बारे में हर सवाल का एक ही जवाब मिलता है। ढांचा, संतुलन, स्वायत्तता - बड़े शब्द, कोई विशिष्टता नहीं। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार देश को यह बताने से इनकार कर रही है कि वह क्या बातचीत कर रही है। गांधी ने कहा, हमें वैश्विक तकनीकी दौड़ में अग्रणी होना चाहिए, लेकिन इसके बजाय हमें इस बारे में अंधेरे में रखा जा रहा है कि भारत के डेटा की सुरक्षा कैसे की जाएगी। उन्होंने जोर देकर कहा कि लोगों को देश के डेटा के संबंध में पारदर्शिता और जवाबदेही का अधिकार है। उन्होंने कहा कि हम एक बेहतर भविष्य बनाने के लिए अपने डेटा के मालिक होने और उसका उपयोग करने के हकदार हैं।

आबकारी नीति मामले में केजरीवाल खुद करेंगे अपनी पैरवी

» जस्टिस स्वर्ण कांता शर्मा को हटाने की मांग

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली आबकारी नीति मामले में कानूनी लड़ाई अब एक दिलचस्प मोड़ पर पहुंच गई है। दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी (आप) के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल आज दिल्ली हाई कोर्ट में खुद अपनी दलीलें पेश करेंगे। इसके साथ ही, केजरीवाल और मनीष सिसोदिया ने इस मामले की सुनवाई कर रही जस्टिस स्वर्ण कांता शर्मा की बेंच पर अविश्वास जताते हुए खुद को इस मामले से अलग करने की अर्जी दाखिल की है।

आम आदमी पार्टी की कानूनी टीम के मुताबिक, केजरीवाल आज व्यक्तिगत रूप से अदालत के सामने पेश होंगे। यह पहली बार नहीं है जब केजरीवाल खुद अपनी पैरवी कर रहे हैं, लेकिन सीबीआई द्वारा उन्हें बरी किए जाने के खिलाफ दायर याचिका पर उनकी दलीलें काफी महत्वपूर्ण मानी जा रही हैं। केजरीवाल और मनीष सिसोदिया ने दिल्ली हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश से संपर्क कर इस मामले को जस्टिस स्वर्ण कांता शर्मा की बेंच से किसी दूसरी अदालत में स्थानांतरित करने की मांग की है। उनकी टीम का तर्क है कि न्याय के हित में इस मामले की सुनवाई किसी अन्य बेंच द्वारा की जानी चाहिए।

पश्चिम एशिया संकट अब भी विकट

» अमेरिका, इस्राइल और ईरान में 45 दिन के युद्धविराम के लिए बातचीत जारी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। अमेरिका, इस्राइल और ईरान में 37वें दिन भी युद्ध जारी है। इसी बीच ईरान और अमेरिका के बीच जारी तनाव के बीच 45 दिन के संभावित युद्धविराम को लेकर कूटनीतिक कोशिशें तेज हो गई हैं। एक्सियोस न्यूज आउटलेट की रिपोर्ट के मुताबिक, अमेरिका, ईरान और क्षेत्रीय मध्यस्थ देशों के बीच इस प्रस्ताव पर गंभीर बातचीत चल रही है, जिसे युद्ध खत्म करने की दिशा में एक अहम कदम माना जा रहा है। सूत्रों के अनुसार, ये वार्ताएं पाकिस्तान, मिस्र और तुर्की की मध्यस्थता में हो रही हैं। साथ ही, दोनों पक्षों के वरिष्ठ अधिकारियों के बीच सीधे संदेशों के जरिए भी संवाद जारी है।

रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि अगले 48 घंटों में समझौता होने की संभावना कम है। हालांकि, इसे युद्ध को और बढ़ने से रोकने का अंतिम प्रयास माना जा रहा है।

वहीं खबर आ रही है कि अमेरिका ने अपने पायलट को ईरान से रेसक्यू कर लिया है। ईरान की सेना ने दावा भी किया है कि इस ऑपरेशन के दौरान उसने अमेरिका के कई विमान मार गिराए हैं। ईरान के मुताबिक एक एफ 13ई ट्रांसपोर्ट विमान और दो ब्लैकहॉक हेलीकॉप्टर भी इस दौरान नष्ट हुए हैं। हालांकि इन दावों की स्वतंत्र रूप से अभी पुष्टि नहीं हो पाई है।

ईरान ने अमेरिका पर तस्वीरों के जरिए तंज कसा

ईरान ने अमेरिका पर तस्वीरों के जरिए तंज कसा है। जहां अमेरिकी राष्ट्रपति ने अपने पायलट को ईरान से निकाल लाने को अपनी जीत बताई है। वहीं ईरानी संसद के स्पीकर ने इन फोटो को शेयर करते हुए कहा कि अगर अमेरिका को ऐसी तीन और जीत मिल जाए तो वो पूरी तरह से बर्बाद हो जाएगा। वहीं इसके अलावा ईरान की एंबेसीज कई जगह जो हैं वो भी लगातार इन तस्वीरों को साझा कर रही हैं अलग-अलग कैप्शंस के साथ। आपको बता दें इंडिया में स्थित ईरान की एंबेसी ने इन तस्वीरों को साझा करते हुए लिखा है वेलकम टू हेल यानी कि जहन्नुम में आपका स्वागत है।

पंजाब की नजरें जीत की हैट्रिक पर

» दो हार के बाद केकेआर कर सकती है टीम में बदलाव

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकाता। तीन बार की चैंपियन कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) के लिए आईपीएल 2026 का सीजन अच्छा नहीं रहा है और टीम ने लगातार दो मैच गंवाए हैं। केकेआर की टीम गेंदबाजों की चोट से जूझ रही है, लेकिन टीम की असली समस्या खराब रणनीति है। केकेआर की टीम कागजों में मजबूत नजर आ रही है, लेकिन उसकी रणनीति कारगार नहीं रही है जिस कारण टीम को मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। केकेआर का सामना अब पंजाब किंग्स से है जिसने अपने शुरुआत दोनों मुकाबले जीते हैं। पंजाब की कप्तानी उसी श्रेयस अय्यर के पास है जिन्होंने केकेआर को 2024 में अपनी कप्तानी में खिताब दिलाया था।

टी20 में खराब फॉर्म में होने के बावजूद कप्तान के तौर पर लाए गए अजिंक्य रहाणे ने सबसे अधिक रन बनाकर कुछ हद तक आलोचकों को चुप करा दिया लेकिन चंद्रकांत पंडित की जगह अभिषेक नायर को मुख्य कोच बनाने जैसे टीम के फैसलों पर सवाल उठ रहे हैं।

वहीं अय्यर की अगुआई में पंजाब ने अब तक अपने दोनों मैच जीते हैं। और आज उनकी नजरें जीत की हैट्रिक पर होंगी। युवा कूपर कोनोली ने दो मैच में 108 रन बनाकर तीसरे नंबर पर प्रभावित किया है, जबकि प्रियांश आर्य और प्रभसिमरन सिंह ने टीम को अच्छी शुरुआत दी है। अय्यर ने बीच के ओवरों में भरोसे के साथ बल्लेबाजी की है। अर्शदीप सिंह, मार्को यानसेन और विजयकुमार विशाख की मौजूदगी में गेंदबाजी इकाई संतुलित लग रही है, जबकि अनुभवी लेग स्पिनर युजवेंद्र चहल आक्रमण को मजबूत करते हैं। केकेआर की उलझी हुई रणनीति टीम संयोजन में साफ नजर आती है। न्यूजीलैंड के तीन शीर्ष खिलाड़ियों फिन एलेन, टिम सीफर्ट और रचिन रवींद्र के टीम में होने के बावजूद नाइट राइडर्स की टीम उनका सही इस्तेमाल करने में नाकाम रही है।

पंत ने कप्तानी पारी खेलकर लखनऊ को चखाया जीत का स्वाद

हैदराबाद। कप्तान ऋषभ पंत की नाबाद अर्धशतकीय पारी की मदद से लखनऊ सुपर जाएंट्स ने सनराइजर्स हैदराबाद को पांच विकेट से हराया। हैदराबाद ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में नौ विकेट पर 156 रन बनाए थे। जवाब में लखनऊ ने पंत के नाबाद 68 रनों के दम पर 19.5 ओवर में पांच विकेट पर 160 रन बनाकर मैच जीता। लखनऊ ने इस तरह इस सीजन का अपना पहला मैच जीता, जबकि तीन मैचों में सनराइजर्स की यह दूसरी हार है। हैदराबाद के खिलाफ लखनऊ का रिकॉर्ड अच्छा रहा है और उसने इस टीम के खिलाफ पिछले सात में से पांच मुकाबले जीते हैं। इसमें से हैदराबाद में टीम ने चार में से तीन मैच अपने नाम किए हैं। लखनऊ अगर ये मुकाबला अपने नाम करने में सफल रहा तो इसका श्रेय पूरी तरह पंत को जाता है।

म्यूजिक लवर्स का क्रेज

हर गाने पर गुनगुनाया लखनऊ

बावरा मन.. से लेकर हवा सा था वो.. तक पर जाग उठें लखनवीं होंठ

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। दयाल लॉन में इकटठा यह भीड़ स्वानंद किरकिरे को सिर्फ सुनने नहीं आयी थी बल्कि वह वहां जीने आयी थी। बावरा मन.. के साथ किसी की पुरानी मोहब्बत जाग उठी आओगे जब तुम.. ने किसी को इंतजार याद दिला दिया और बहती हवा सा था वो.. ने हर किसी को अपने कॉलेज के दिन लौटा दिए।

हर गाना एक कहानी था और हर श्रोता उस कहानी का किरदार। तालियां सिर्फ परफार्मेंस के लिए नहीं बज रही थीं बल्कि वह उन एहसासों के लिए बज रही थीं जो सालों से दिल में कहीं दबे थे। इस भीड़ की सबसे खास बात यह थी कि यहां कोई अजनबी नहीं था। हर श्रोता दूसरे के एहसास को समझ रहा था। कोई आंखें बंद कर गुनगुना रहा था कोई मोबाइल की फ्लैशलाइट जलाकर उस पल को कैद करने की कोशिश कर रहा था तो कोई बस चुपचाप बैठकर हर शब्द को अपने भीतर उतार रहा था। यहां संगीत सुनने का नहीं उसे जीने का माहौल था।

मौसम बना महफिल का हीरो, बूंदों ने लिखी कहानी

दयाल बाग लॉन में सजी महफिल कोई एक मंच नहीं था बल्कि पूरी कायनात जैसे उसी महफिल का हिस्सा बन गई हो। 4पीएम कन्सर्ट का सबसे अनदेखा लेकिन सबसे असरदार किरदार था मौसम। वह मौसम जो आम दिनों में लोगों को घरों में कैद कर देता है लेकिन शनिवार की शाम वह खुद बाहर निकलकर सुरों का हमसफर बन गया। बूंदा-बांदी की हल्की चादर जैसे आसमान से उतरकर हर सुर के साथ लिपट रही थी। स्वानंद किरकिरे की आवाज जब हवा में घुलती तो लगता जैसे हर बूंद उसी के साथ झूम रही है। यह कोई साधारण बारिश नहीं थी यह वह बारिश थी जो हर शब्द को और गहरा हर एहसास को और नम बना रही थी।

बिजली की कड़क भी कोरस बनी

बिजली की कड़क भी उस रात डराने नहीं बल्कि सजाने आयी थी। हर बार जब आसमान चमकता था तो लगता जैसे किसी हाई नोट पर खुद प्रकृति तालियां बजा रही हो। मंच पर गूंजती आवाज और आसमान में गूंजती गर्जना दोनों के बीच एक अजीब सी जुगलबंदी बन गयी थी। यह दृश्य ऐसा था जिसे शब्दों में बांधना आसान नहीं बस महसूस किया जा सकता था। और सच कहूं तो वह पूरा माहौल किसी फिल्मी सीन से कम नहीं था। कुछ कुछ बेताब की उस यादगार बारिश जैसा जहां बिजली बारिश और दिल की धड़कनें एक ही लय में बहती हैं। वहां भी मोहब्बत थी यहां भी मोहब्बत थी बस फर्क इतना था कि वहां पर्दे पर कहानी चल रही थी और यहां हर शख्स अपनी कहानी खुद जी रहा था।

महाराष्ट्र कार्यालय :- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। विधि सलाहकार : मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, दूरभाष : 0522- 4078371 । Email : daily4pm@gmail.com । website: www.4pm.co.in ।
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा
द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक- संजय शर्मा